एकात्मता स्त्रोत में वर्णित प्रमुख नदियों का महात्मय

श्रीमती प्रतिभा तिवारी
भगत सिंह नगर (बघवा) कबरई, महोबा

सारांश

नदी शब्द का नामकरण संस्कृत के नट धातु से हुआ है, जिसका शाब्दिक अर्थ है ''आवाज करना'' नदी के प्रवाह में उसके जल में कलकल ध्वनि होने के कारण ही नदी नाम पड़ा।

भारत ही नहीं वरन विश्व की लगभग सभी संस्कृतियों का विकास नदियों के किनारे ही हुआ है। ऋग्वेद में आर्यों का निवास स्थान को सप्त सिन्धु प्रदेश कहा गया है। भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि विकास का आधार प्राचीन काल से नदियां ही रही है। नदियों के कारण ही हमारी भूमि शस्य श्यामला बन पायी है। नदियों का वर्णन संस्कृत के ग्रंथों में मिलता है। भारत भूमि पुण्य भूमि है। नदियों के किनारे ऋषि मुनियों ने निवास करते हुए ही अनेक ग्रंथों की रचना की । वर्तमान में विलुप्त नदी सरस्वती के तट पर ही ऋषि मुनियों ने वेद, पुराणों व अन्य ग्रंथों की रचना की। सरस्वती एक पौराणिक नदी है। सरस्वती के तट पर रहकर एवं इसका पानी सेवन कर ही ऋषियों ने वेदों की रचना की। इसी कारण से ही सरस्वती को ज्ञान की देवी माना जाने लगा।

एकात्मता स्तोत्रम का पाठ जो हिन्दू संस्कृत में दिनचर्या का अंग है, में प्राचीन पवित्र नदियों के नामों का उल्लेख है।

गंगा, सरस्वती, सिन्धुर, ब्रहमपुत्रश्च गण्ड़की।
कावेरी, यमुना रेवा, कृष्णा गोदा महानदी।।

अर्थात गंगा, सरस्वती, सिन्धु, ब्रहमपुत्र, गण्ड़की, रेवा (नर्मदा) कृष्णा, गोदावरी, महानदी।

कूट शब्द– सप्त सिन्धु, गंगा महात्म्य, कृष्णावेणा, एकात्मता, नदीतिमा, न्र्यंबकेश्वर, अवेस्तन, सांग्यो नदी।

नदियों का नामकरण

नदियों के उक्त नाम प्राचीन काल के ऋषि मुनियों द्वारा रखे गये हैं। भारत की प्रमुख नदियों के नाम करण तत्समय के आधार पर किया गया हैं।

श्री गगा महात्म्य के अनुसार–गंगा नदी का हिमालय पर्वत के गंगोत्री से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरकर –गा **(पृथ्वी)** में आकर पुनः अपने स्थान को लौटनें के कारण इस नदी का नाम गंगा पड़ा। गंगा को अन्य कई नामों से भी जाना जाता है। जैसे – जान्हवी, विष्णुपदी, इन नामों के आधार का वर्णन संस्कृत ग्रंथों में वर्णित है।

श्री बाल्मीकि कृत **''रामायण''** के अनुसार गोमती नदी का यह नाम इसके किनारे गायों के झुण्ड के विचरण के कारण पड़ा। यमुना नदी का नाम यमनोत्री से उद्गम होने व यम की बहन होने के कारण पड़ा। कालिंदी नदी का नाम ''कालिंदी'' पर्वत से प्रवाहित होने के कारण पड़ा। सरयू नदी की उत्पत्ति ब्रहमसर से होने के कारण इसका नाम शरयू पड़ा।

श्री कालीदास रचित मेघदूतम में नर्मदा नदी को रेवा नाम से संबोधित किया गया। जिसका अर्थ है कूदना, पहाड़ी चट्टानों से नीचे गिरने के कारण ही इसे रेवा नाम दिया गया। नर्मदा या रेवा उद्गम स्थल अमरकंटक है।

कृष्ण वर्ण होने के कारण व वेणा **(ऐन्ना)** नदी में मिलने के कारण कृष्णा नदी का संयुक्त नाम कृष्णा वेणा हो गया।

ब्रहमकुण्ड सें उद्गम होने के कारण ब्रहमपुत्र नदी का नाम पड़ा। महानदी व सिन्धु नदी का नाम उसके शब्द कोशगत अर्थ के कारण पड़ा।

एकात्मता स्त्रोत में वर्णित नदियों का संस्कृत ग्रंथों में उल्लेख निम्नवत है –

गंगा नदी–

गंगा को भारत का हृदय एवं प्राण की संज्ञा दी गयी। गंगा को अति पवित्र नदी माना गया। वन पर्व में गंगा की पवित्रता का उल्लेख करते हुए वर्णन है कि यदि कोई व्यक्ति सैकड़ों पाप करने के बाद गंगा (प्रयाग) में स्नान कर ले तो उसके समस्त पापों का नाश हो जाता है। श्रीमद् भगवत गीता में श्रीकृष्ण ने नदियों में स्वयं को गंगा कहा है। मनुस्मृति के अनुसार–गंगा सबसे पवित्र है। विष्णु पुराण एवं भविष्य पुराण में गंगा की महिमा का वर्णन करते हुए उसकी महिमा का बखान किया गया। ब्रम्हाण पुराण में गंगा को विष्णुपदि एवं भगवान शंकर की जटाओं में अवस्थित माना गया है।

सरस्वती नदी –

वर्तमान में विलुप्त हो चुकी सरस्वती नदी की महिमा/वर्णन वेदों व वैदिक ग्रंथों में है।

ऋग्वेद के लगभग सभी मण्डलों में सरस्वती नदी का वर्णन है ऋग्वेद के 'नदी सूक्त' में सरस्वती नदी को केवल नदी देवी के रूप में वर्णन निम्नानुसार किया गया है।

इमं में गंगे यमुने सरस्वती शुतुद्रि स्तोमं सचता परूष्णया असिवन्या मरूद्वधे वितस्त यार्जीकीये ऋणुह्मा सुषोमया।

ऋग्वेद में सरस्वती को सर्वश्रेष्ठ नदी, नदीतिमा सर्वश्रेष्ठ देवी की उपाधि दी गयी है। इसमें सरस्वती नदी को सप्त सिन्धु नदियों की जननी, गायों का पालन करने तथा दूध, घी से युक्त होने का वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में सरस्वती की स्तुति में 75 मंत्र है। जो ऋग्वेद के चौथे मण्डल को छोड़कर शेष 9 मण्डलों में समाहित है। ऋग्वेद के बाद सरस्वती नदी के विलुप्त होने का उल्लेख है।

सिन्धु नदी –

सिन्धु नदी का इतिहास गंगा नदी से भी पुराना है। सिन्धु नदी से ही यहां के निवासियों को हिन्दू कहा जाने लगा। संस्कृत के शब्द 'स' ध्वनि का उचारण अवेस्तन भाषा (पारसियों या ईरानियों की भाषा) में 'ह' हो जाता है। जिससे कालान्तर में सिन्धु नदी के किनारे निवास करने वालों को हिन्दू कहा जाने लगा।

सिन्धु नदी को अंग्रेजी भाषा में इंडस रिवर कहते है। अतः सिन्धु नदी के उक्त नाम पर ही भारत का नाम इण्डिया या यहां के निवासियों का नाम इण्डियन पडा। सिन्धु नदी के किनारे ही वैदिक धर्म व संस्कृति विकसित हुई। बाल्मीकि रामायण में व जैन ग्रंथों में भी सिन्धु नदी का वर्णन मिलता है।

ब्रहमपुत्र नदी –

ब्रहमपुत्र भारत की ही नहीं वरन एसिया की सबसे बड़ी नदी। ब्रहम पुत्र नदी के तटों पर अनेक संस्कृतियों का मिलन हुआ है। तिब्बत स्थित पवित्र मानसरोवर झील से उद्गम हुई सांग्यों नदी ब्रहमपुत्र नदी कहलाती है। बाग्लादेश में यह मेघना नाम से जानी जाती है। ब्रम्हर्षि परसुराम द्वारा अपनी ही माता के वध के कारण लगे पाप की मुक्ति ब्रहमपुत्र की शरण में आकर प्राप्त हुई।

चरक संहिता में वर्णित सूक्त

परिमण्डलेर्मध्ये मेरूरूत्तम पर्वतः।
ततः सर्वः समुत्पन्ना वृत्तयों द्विजसत्तमः।।

में मेरूपर्वत को आदि मानव की उत्पत्ति का क्षेत्र मानती है जो तिब्बत में है। सृष्टि की रचना ब्रम्हा द्वारा होने के कारण मनुष्य ब्रम्हा का पुत्र ही है। इसी कारण मेरू पर्वत से निकलने वाले प्रवाह को ब्रहमपुत्र कहते हैं।

गण्ड़की नदी – गण्ड़की नदी को नारायणी नदी गण्ड़क नदी भी कहते हैं। गण्ड़क नदी काली और त्रिशली नदियों के संगम से बनी नदी है जो नेपाल और भारत में प्रवाहित है।

महाभारत सभा पर्व में गण्ड़की नदी का उल्लेख गण्ड़क रूप में किया गया।

ततः स गंडकाञनछूरो विदेहान भरतर्षभः
विजित्याल्पेन कालेन दशाणनि जयत प्रभुः

महाभारत सभा पर्व में गण्ड़की नदी का उल्लेख सदानीरा एवं तीर्थ रूप में भी वर्णन किया गया।

गंडकींच महाशोणां सदानीरां तर्थव च।
मंडकी तु सभा साद्य सर्व तीर्थ जलोवाभ्दवाम्।।

कावेरी नदी–

कावेरी नदी को भी दक्षिण की गंगा कहते हैं जिसका वर्णन कई पुराणों में मिलता है। दक्षिण में कावेरी नदी को गंगा के समान पवित्र एवं मां की संज्ञा दी जाती है। विष्णु पुराण में कावेरी का वर्णन मिलता है। कावेरी नदी वर्तमान में कर्नाटक एवं तमिलनाडु राज्य से बहने वाली नदी है।

पुराणों में वर्णन के अनुसार कावेरी की शादी अगस्त्य ऋषि से इस शर्त पर हुई कि आगस्त्य ऋषि हमेशा कावेरी के साथ ही रहेंगे किन्तु आगस्त्य ऋषि के बाहर जाने पर कावेरी ने नदी का रूप ले लिया।

महाभारत सभा पर्व में कृष्णा एवं गोदावरी नदी के साथ इसका उल्लेख इस प्रकार किया गया है–

'गोदावरी, कृष्णवेणा कावेरी च सरिद्वारा।

यमुना नदी–

यमुना का उद्गम स्थल 'यमनोत्री' है यमुना को जमुना यमी नाम से भी जाना जाता है। कालिंद पर्वत से निकलने के कारण व इसके पानी का रंग श्यामल होने के कारण इसे कालिंदी नाम से भी जाना जाता है।

पौराणिक वर्णन के अनुसार विश्वकर्मा की पुत्री संजना (संज्ञा) से उत्पन्न सूर्य की पुत्री यमुना कहलायी तथा यह यम की बहन है। एक अन्य वर्णन में श्रीकृष्ण भगवान के भाई ने यमुना नदी को अपने हल से दो भागों में बांट दिया था। इसलिये बलराम का नाम यमुनाभिद पड़ा।

रेवा (नर्मदा) नदी –

भारत की प्रसिद्ध नदी नर्मदा का नाम ही रेवा है। जिसका उल्लेख प्राचीन संस्कृत साहित्य में मिलता है। प्राचीन ग्रंथों श्रीमद् भागवत पुराण में इसके दोनों नामों का उल्लेख है। अन्य ग्रंथों में इसके पूर्वी अथवा पर्वतीय भाग को रेवा तथा पश्चिमी एवं मैदानी भाग को नर्मदा कहा गया है। रेवा का अर्थ है उछलना जो इसके पर्वतीय भाग को तथा नर्मदा का अर्थ है नर्म जो इसके मैदानी भाग को प्रदर्शित करता है।

अमर कोश में रेवा या नर्मदा नदी के अन्य नामों का उल्लेख करते हुए लिखा है "**रेवा तु नर्मदा सोमोभ्द्वामेकलकन्या का**" जिसमें नर्मद को सोमोभ्द्वा और मेकल कन्या अर्थात सोम पर्वत से और मेकल पर्वत से निकलने वाली कहा गया है।

कालीदास रचित मेघदूत में नर्मदा का रेवा नाम से सुन्दर वर्णन वर्णित है –

स्थित्वा तस्मिन वनचरवधुभुक्त कुन्जे मुहूर्तम।
तोयोत्सगी द्दुततरर्गतिस्तत्पर वर्त्मतीर्णः रेवां।।
द्रक्ष्यस्युपल विषमे विंध्य पादे विशीर्णम।
भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमंगे गजस्य।।

कृष्णा नदी

कृष्णा नदी को कृष्ण वेणा नाम से भी जाना जाता है। यह दक्षिण भारत के महाराष्ट्र प्रान्त में एक महत्वपूर्ण नदी है जिसकी सहायक नदियां तुंगभद्रा गोदावरी, कावेरी, आदि है पुराणों में कृष्णा को विष्णु का अंश माना गया है। महाभारत सभा पर्व में इसे कृष्ण वेणा नाम से वर्णित किया गया है

श्रीमद् भगवत पुराण में कृष्णा नदी का वर्णन निम्नवत है –

कावेरी वेणी पयस्विनी शर्करावती तुंगभद्रा कृष्णा वेण्या भीमरथी।

गोदावरी नदी –

गोदावरी नदी भारत की प्रसिद्ध नदियों में से एक है जो दक्षिण भारत में प्रवाहित है। इसका उद्गम नासिक के त्र्यंबक गॉव से है। बराह पुराण में उल्लेख है कि गौतम ऋषि गंगा को दण्डक वन में ले गये। जहां वह गोदावरी नाम से जानी जाने लगी। गोदावरी नदी के तट पर त्र्यंबकेश्वर व नासिक जैसे प्रसिद्ध तीर्थ है गोदावरी को दक्षिण की गंगा भी कहते हैं।

महाभारत के भीष्म पर्व में गोदावरी का वर्णन निम्नानुसार है।

गोदावरी नर्मदा च बहुदां च महानदीम्।

वेदों में गोदावरी नदी का उल्लेख नहीं है। कालीदास रचित रघुवंश महाकाव्य में गोदावरी का वर्णन करते हुए गोदावरी को गोदा कहा गया है।

महानदी –महानदी की विशालता एवं धार्मिक दृष्टि से इसका नाम महानदी है। इस महभारत के भीष्म पर्व में मत्स्य पुराण ब्रहम पुराण आदि में चित्रोत्पला नदी कहा गया है जिसको पुण्यदायिनी पाप नाशिनी उल्लिखित कर स्तुति की गयी है।

उत्पलेशं सभासाद्या यीवच्चित्रा महेश्वरी।
चित्रोत्पलेति कथिता सर्व पाप प्रणाशिनी।।

उपसंहार –

प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रंथों में नदियों का वर्णन देवी के रूप में किया गया है। एकात्मता स्त्रोत में वर्णित समस्त नदियों के उपरोक्त उल्लेख से स्पष्ट है कि प्राचीन ग्रंथों में नदियों को जीवनदायिनी, ज्ञानदायिनी देवी के रूप में वर्णित कर उनके महत्व को उदघृत किया गया, जिससे स्पष्ट है कि तत्समय के ऋषि मुनि जल संचयन के लिये जनमानस को जागरूक करने के निमित्त ग्रंथों में नदियों का वर्णन करते थे। जल स्त्रोत होने के कारण ही विश्व की समस्त संस्कृतियों का विकास नदियों के किनारे हुआ तथा प्राचीन पौराणिक नगर (तीर्थ स्थल) भी नदियों के किनारे ही स्थित है।

संदर्भ सूची

1. एकात्मता स्त्रोतम
2. ऋग्वेद नदी सूक्त
3. श्री बाल्मीकि कृत रामायण
4. मेघदूतम्
5. महाभारत भीष्म पर्व
6. मत्स्य पुराण
7. ब्रम्ह पुराण
8. वन पर्व
9. बराह पुराण
10. कालीदास कृत्य रघुवंश महाकाव्य
11. महाभारत सभा पर्व
12. श्रीमद् भागवत महापुराण
13. अवेस्ता वेन्दीदार फर्गर्द 1.18
14. जम्बूदीप प्रज्ञप्ति
15. मार्कण्डेय पुराण
16. कालिका पुराण
17. चरक संहिता